16／1／1965 शनिचरवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– आने वाले कल की तुम तस्वीर हो.......।

ओमशांति! गीत बच्चों ने सुना और बच्चे यह समझते हैं कि हमारे सामने बाबा, जिसको पतित–पावन कहा जाता है, ज़रूर बाबा ही कहेंगे। परमपिता परमात्मा पतित–पावन। ज़रूर उनको ही कहेंगे पतित–पावन। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर को तो नहीं कहेंगे ना। क्यों? ज्ञान का सागर है। यह तो बच्चे जानते हैं कि हम आत्माएँ परमपिता परमात्मा से ज्ञान सुनती हैं; क्योंकि अभी तुम आत्म–अभिमानी बने हो। दुनिया में सब देह–अभिमानी हैं। तो जो आत्म–अभिमानी होते हैं वो श्रेष्ठाचारी बनते हैं; क्योंकि उनको परमात्मा ही बैठ करके देही–अभिमानी या आत्म–अभिमानी (बनाते हैं) और उनको समझाते हैं कि देखो बच्चे, पाप आत्मा बनती है, पुण्य आत्मा बनती है। तुम ऐसे नहीं कहेंगे, पाप जीव बनते हैं या पुण्य जीव बनते हैं। नहीं। तुम कहते हो, पाप आत्मा बनती है, शरीर नहीं; क्योंकि संस्कार आत्मा में रहते हैं। शरीर तो घड़ी–2 विनाश हो जाता है। तो गोया तुम जानते हो कि बाप को, शिवबाबा को, परमपिता परमात्मा को अविनाशी सर्जन भी कहते हैं। अविनाशी सर्जन का अर्थ क्या है? आत्मा भी अविनाशी तो आत्मा का बाप भी अविनाशी ; क्योंकि शरीर ही मरता है और विनाश होता है। आत्मा तो विनाश नहीं होती है। हाँ, इतना ज़रूर है कि आत्मा के ऊपर ये शैतानी की कट चढ़ती है। कौन–सी कट चढ़ती है? बिल्कुल गंदे ते गंदी नं०वन कट चढ़ती है विकार की। पीछे सेकेण्ड नं० में क्रोध की कट। यह कट है, जिसको जंक कहा जाता है। ये बैठ करके आत्माओं को समझाते हैं। कौन? परमपिता परमात्मा। तो यह निश्चय होना चाहिए ना कि अभी परमपिता परमात्मा इस साधारण ब्रह्मा के रथ में प्रवेश कर, यह हुआ रथी। ये रथ का रथी; परन्तु बाप आ करके समझाते हैं कि (यह तुम) जानती हो कि प(रमपिता) परमात्मा अपने बच्चों से बात करते हैं और उनको कहते हैं कि हे आत्माएँ! तुम्हारे ऊपर ये पाँच विकार की कट चढ़ गई है। उसको कहा जाता है शैतानी कट। पाँच विकार को रावण कहा जाता है ना। तो इसको रावण की कट चढ़ गई है; इसलिए तुम सब बहुत दुःखी हो पड़े हो। बाप कहते हैं– देखो, मैं कैसे तुम्हारी कट उतारता हूँ। देखो, सीधा–2 बताते हैं ना। कल्प पहले भी (उतारी थी)। कल्प–2 तुम्हारी कट मैं उतारता हूँ। कैसे उतारता हूँ? क्योंकि सर्जन तो मैं ही हूँ ना। दूसरा तो कोई सर्जन हो नहीं सकता है। मनुष्य मात्र कोई भी हो, श्री–श्री 108 कहने वाले हों या मण्डलेश्वर कहने वाले हों; परन्तु नहीं, वो तो मनुष्य ठहरे ना। मनुष्य आत्मा की कट उतार नहीं सकते हैं। आत्मा की कट को (यानी) जंक उतारने के लिए परमात्मा चाहिए, सर्वशक्तिवान चाहिए। जो ही आकर कहते हैं कि हे जीव की आत्माएं या हे मेरे बच्चे, सिर्फ एक मुझे याद करने से (तुम्हारी कट उतरेगी)। जितना याद करेंगी उतना कट उतरेगी। न याद करेंगी तो कट नहीं उतरेगी। फिर कट न उतरेगी तो धारणा भी अच्छी नहीं होगी, पद भी नहीं पाएँगे। इसलिए कट उतारने के लिए (बाप को याद करो); क्योंकि जिसके ऊपर कट चढ़ी है, उसको पतित कहा जाता है। तो पतित आत्मा बनती है; इसलिए फिर उस पतित आत्मा को शरीर भी ऐसा ही पतित मिलता है। जैसे सतोप्रधान आत्मा है तो सतोप्रधान गोरा शरीर मिलता है, फिर जब आत्मा सतो बनती है तो शरीर भी ऐसे सतो मिलता है, जिसको फिर सिल्वर एज भी कहा जाता है; क्योंकि थोड़ी खाद (अथवा) कट चढ़ती है, जैसे आटे में लूण कहें। पीछे जब द्वापर आता है तो फिर बहुत बड़ी कट चढ़नी शुरू हो जाती है। उसको फिर कहा जाता है विकार की कट। उसमें इतनी विकार की कट नहीं होती है; परन्तु यह तो समझते हो कि कलाएँ कोई एकदम नहीं बदलती हैं। 16 कला से 14 कला आने में 1250 वर्ष लग जाते हैं। (कलाएं) कमती–3 (होती जाती हैं)। तो ये कौन बैठ करके बच्चों को समझाते हैं? बाप। यह बच्चों को....है हमारा बाप इस ब्रह्मा के रथ द्वारा

(समझाते हैं)। हम उनके बच्चे ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ (हैं) ; क्योंकि ये हो गए बच्चे। अभी इसको कहा जाता है कि ये हुए हैं राम के बच्चे, वो हैं रावण के बच्चे। तो ये सीधा–2 समझाते हैं ना। तो वो सभी रावण के ही बच्चे हैं; क्योंकि विख से पैदा होते हैं; इसलिए इनको भ्रष्टाचारी कहा जाता है। बस, विख ही मूल है। भले कोई घर छोड़ करके विख ना पीवे, पवित्र हो जाए ; परन्तु उसका शरीर विख का बना हुआ है। यह विख (अथवा) पॉइज़न सतयुग में होता नहीं है, जिसको कहा जाता है मूत पलीती। तो सब मूत से पैदा होते हैं ना। जो भी मनुष्य मात्र यहाँ हैं तो मूत पलीती तो हैं ना; इसलिए उनको कहा जाता है शैतानी बच्चे। तो ये जो (क)हते रहते हैं कि पतित–पावन आओ, सो तो सभी कहते हैं ना, सभी उनको याद करते हैं, भले कितना भी कोई किसको आशीर्वाद देने वाला हो; परन्तु उनके ऊपर कोई और की आशीर्वाद चाहिए जिसको याद करते हैं। जैसे देखो, पोप आया, तो वो जाते थे और कहते थे कि ये आशीर्वाद देते हैं, ब्लेसिंग देते हैं; परन्तु वो भी तो मूत पलीती हैं ना। उनके ऊपर भी कोई की ब्लेसिंग तो चाहिए ना। उनसे ऊँचा भी तो कोई है ना। तो देखो, उनकी ब्लेसिंग चाहिए। वा तो उनकी ब्लेसिंग लेना है या तो ख़तम होना है। उनकी ब्लेसिंग लेंगे, जैसे तुम उनकी ब्लेसिंग ले रहे हो। ब्लेसिंग तब तुमको मिलती है जबकि तुम श्रीमत पर चलते हो। नहीं तो श्रीमत पर न चलने वाले के ऊपर, जो आज्ञाकारी न होगा, उनके ऊपर आशीर्वाद कैसे आएगी– यह भी तो क्वेश्चन है, जो कहे कि विकार में न जाओ, जो कहे कि देही–अभिमानी बनो। अगर देही–अभिमानी न बनते हैं, देह का अभिमान है तो इतना वो फरमान नहीं मानते हैं, तो फिर इतना पद भ्रष्ट हो जाता है। जबकि बाप आए हुए हैं पूरा.....। बोलते हैं कि बच्चे, तुम जानते हो कि सर्विस के लिए तुमको तीन पैर पृथ्वी के नहीं मिलते हैं। यानी इस भारत को भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी 5000 वर्ष पहले मुआफिक (बनाने के लिए) तुमको नहीं मिलती है और बरोबर जैसे कि छोटे बच्चे हो। तो देखो, फिर बाबा कहते हैं तुम्हारे लिए नं०वार पुरुषार्थ अनुसार मैं क्या करता हूँ? ये सारी जो सृष्टि है ना उसको तुम्हारे लिए मैं रेक्विज़िशन(रिक्वेस्ट) कर लेता हूँ। जैसे आजकल गवर्मेन्ट कोई रेक्विज़िशन करती है ना। ....जो भी मुसलमान चले गए तो रेक्विज़िशन कर लिया। अभी तुमको भी ऐसे ही करना चाहिए। तुमको यहाँ के जो फाइनेन्स मिनिस्टर्स हैं ना उनको जा करके (समझाना चाहिए)। प्रदर्शनी तो होती है। देखो, इन सब बातों में बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। लंगड़े–लूले बुद्धि वाले ये काम नहीं कर सकते हैं। इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए; क्योंकि डायरेक्शन तो देते हैं। तुमको तो जगह मिलती नहीं है। प्रदर्शनी भी तो निकालते हो। कोशिश करते हो कोई मिनिस्टर, कोई फलाने से....नहीं, तुम पकड़ो फाइनेन्स मिनिस्टर्स को। और कोई मिनिस्टर तुम्हारा काम नहीं करेंगे, फाइनेन्स मिनिस्टर को पकड़ो। बोलो– देखो, हम श्रीमत पर यह जो भारत है उनको फिर श्रेष्ठाचारी बना रहे हैं। आ करके समझो, भले देखो। प्रदर्शनी में तो समझाना होता है कि पतित–पावन आ करके ये भ्रष्टाचारी भारत को श्रेष्ठाचारी (बना रहे हैं)। सो हम भी इसी सर्विस पर हैं; इसलिए हमको जमीन चाहिए; क्योंकि गवर्मेन्ट के हाथ में है। हाँ, रेक्विज़िशन करके दो। हम लोन दे सकते हैं, किराया दे सकते हैं, ब्याज दे सकते हैं। अगर कोई सेन्सीबुल बच्चे हों तो उनको ये प्रदर्शनी दिखला करके, पीछे आज नहीं तो कल–परसों (दें)। पुरुषार्थ के लिए कहते हैं कि देखो, उनको अच्छी तरह से समझाओ कि हम इस भारत को श्रीमत पर श्रेष्ठाचारी बना रहे हैं। श्री बिगर तो कभी भी यह भारत......। श्रीमत भगवान, वो कृष्ण नहीं। श्रीमत जो सदैव एकरस, पवित्र है, वो अभोक्ता है, असोचता है, ज्ञान का सागर है, जो स्वर्ग की स्थापना करते हैं, वही जिसको गीता का भगवान कहते हैं, उनकी श्रीमत पर चल हम इस भारत को फिर

श्रेष्ठाचारी स्वर्ग बनाते हैं। उसमें गाया हुआ है कि ऐसे को तीन पैर पृथ्वी के नहीं मिलते थे। तो हम अभी भी कहते हैं कि तीन पैर पृथ्वी के नहीं मिलते हैं। इसलिए तुम क्या करो? कोई भी रेक्विज़िशन करो। इनके पास बहुत जगह रहती है जिनको नीलाम करना है, जो पराई रेक्विज़िट है मुसलमानों की या उनकी (मांगी हुई) ; क्योंकि कुछ सेन्स चाहिए, बुद्धि चाहिए। सो बुद्धि अच्छी रहेगी तब जबकि योग में रहेंगे, देहअभिमान की वो कट उतरती जाएगी, नहीं तो बड़ा मुश्किल है कट उतरना। बाप तो अच्छी तरह से राय देते रहते हैं कि ऐसे को पकड़ो कि हम श्रीमत पर यह कार्य कर रहे हैं, तुम भी आकर समझो। देखो, ये सब श्रीमत पर श्रेष्ठ बनने के लिए प्रतिज्ञा (करते) हैं। ऐसे तो और कोई कर नहीं सकते हैं। सन्यासी ऐसे नहीं (कह सकते हैं) कि देखो, इनको हमने आप समान पवित्र बनाया है। हमारे पास इनके चित्र हैं। बाबा के पास तो चित्र भी रहते हैं। उनके ऊपर भी बड़ा ध्यान चाहिए। सर्विस का इतना कोई ध्यान देते नहीं हैं। वो कैसे रखना चाहिए, कितना बड़ा ब्लॉक होना चाहिए। उसमें भी एक तो सेन्टर में होना चाहिए, एक हेड ऑफिस में होना चाहिए। एक फिर जो मुख्य सेन्टर दिल्ली है, जहाँ काम चलता है, ऐसे होना चाहिए। अभी बाबा के पास इतने सर्विस करने वाले तो हैं नहीं। सर्विस करने वाले मिलना मुश्किल है; क्योंकि बुद्धि चाहिए सर्विस की। खोखली बुद्धि काम नहीं कर सकती है। बहुत विशाल बुद्धि चाहिए। है कुछ भी नहीं, ये भागे, सबसे चित्र लिया तीन–2/चार–2 कॉपी....बनावे। देखो, सर्विस कितनी अच्छी है। सो भी उनकी जो पवित्रता के लिए प्रतिज्ञा (करते हैं)। फिर उनमें लिखा जावे कि हाँ, ऐसा हो सकता है कि यह माया कोई न कोई को जीत लेती है। आश्चर्यवत् परमपिता परमात्मा का बनन्ति, उनसे विश्व का राज्य लेवन्ति। देखो, बाप कहते हैं ना कि मैं यह सारी सृष्टि तुम्हारे लिए रेक्विज़िशन कर लेता हूँ और वो रेक्विज़िशन कर–करके उनको बिल्कुल ही फर्स्ट क्लास बनाय देंगे। यानी बननी तो ड्रामा अनुसार है और फिर तुम उनके ऊपर राज्य करना। देखो, ये भी तो रेक्विज़िशन करते हैं ना, सबका विनाश (कराय देते हैं)। बोलते हैं– देखो, मैं स्वर्ग की स्थापना करता हूँ, बाकी जो भी धर्म हैं उनको विनाश कर देंगे। एक तो बच्चों को देही–अभिमानी बहुत रहना पड़े; क्योंकि देह (में) हम हैं ना। बड़ा जबरदस्त है, चलते–2 किसको फँसा देता है। बहुत मुश्किल होता है, बड़ी रिपोर्टें आती हैं कि बाबा, ये दुःशासन हम द्रौपदियों को नगन किए बिगर रहते नहीं हैं, बड़ा मारते हैं। तो गवर्मेन्ट को भी ये बताना चाहिए कि हम भ्रष्टाचारी को श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। अभी हर एक को हक है। ...ये देवताएँ तो पवित्र बनते हैं ना; क्योंकि पतित जो हैं उनको पावन करने वाला जो बाप है वो आ करके पावन बनाते हैं। वहाँ तो सभी निर्विकारी कहलाते हैं। वाइसलेस (यानी) विकार नहीं। उसमें विकार का पहला अक्षर ही आता है– काम। तो बरोबर देवताएँ वाइसलेस हैं। क्रोध का तो अक्षर ही नहीं निकलता है। है ही विषियस या वाइसलेस। तो बरोबर यह भारत वाइसलेस था। बरोबर सोने की....थी। तो इस भारत को किन्होंने बनाया? ज़रूर बाप ने बनाया होगा और कौन बनाते हैं! तो आत्मा के लिए (ही कहा जाता है)। आत्मा ही अपवित्र बनी है, आत्मा ही रोगी बनी है, आत्मा के ऊपर ही कट चढ़ती है। अभी आत्मा का सर्जन तो परमात्मा ही चाहिए। आत्मा का सर्जन मनुष्य तो हो ही नहीं सकता है। कदाचित् नहीं। तो बाप कहते हैं देखो, मैं आता ही हूँ (पावन बनाने के लिए); क्योंकि यह तो मैं जानता हूँ ना कि मैं ही पतित–पावन हूँ। मैं खुद हूँ, ये मेरे को बहुत मनुष्य बोलते हैं। तो ज़रूर जब मुझे बोलते हैं, सो मैं हूँ तो ज़रूर ना कि मैं पतित–पावन हूँ और सारे भक्तिमार्ग में मुझ पतित–पावन को सभी साधु,संत,महात्मा जो भी हैं याद करते ही आए हैं। जन्म बाई जन्म याद ज़रूर करते हैं– हे पतित–पावन, आओ! या भगवान को याद करते हैं,

किसलिए? मुझे भक्तिमार्ग में क्यों याद करते हैं ? भक्तिमार्ग में भगत तो ज़रूर एक भगवान को ही याद करेंगे ना। ऐसे तो नहीं है कि भगत ही कोई भगवान है। भगत दुःखी होते हैं; इसलिए मुझे याद करते हैं। अभी भगवान कौन है वो तो बिचारे जानते नहीं हैं। अभी मैंने कहा भी है कल्प पहले भी कि भगवानुवाच यानी मैं बैठ करके समझाता हूँ और राजयोग सिखलाता हूँ। समझाया कि मैं ब्रह्मा के तन में आता हूँ अर्थात् उसी के तन में आता हूँ जो पूज्य था और पुजारी बने हैं; जो पवित्र था, अब पतित बने हैं; जो पावन राजा था (अब) पतित रंक बने हैं। मैं उनके ही शरीर में आया हुआ हूँ। अच्छा, वो भी तो जानते हो कि बरोबर ये सभी निश्चय करते हैं कि हम प्रजापिता ब्रह्मा के कुमार–कुमारियाँ हैं। सो तो ज़रूर थे। जब प्रजापिता का नाम है तो ज़रूर था और ज़रूर परमपिता परमात्मा ने ब्रह्मा द्वारा ही ब्राह्मण रचे। ब्राह्मणों को ही दान दिया जाता है। तो मैं दान भी ब्राह्मणों को देता हूँ। किसका दान देता हूँ? ये सारे विश्व का दान देता हूँ; क्योंकि विश्व को पवित्र बनाने के लिए शूद्र से ब्राह्मण बन करके मेरी सर्विस करते हैं। तो देखो, सम्मुख बैठकर समझाते हैं कि बच्चे, कभी भी तुम्हारी दृष्टि ऐसी गंदी नहीं होनी चाहिए; क्योंकि काम या क्रोध ये सभी हल्का काम भी है। तो कभी भी कोई भी दृष्टि हल्के भी– यह प्यार करें, फलाना करे, यह गंदी दृष्टि नहीं होनी चाहिए। तुम्हारा काम ही है बाप को याद करना। तुम्हारी सर्विस ही है बाप को याद करना, औरों को याद दिलाना और सबको बाप का परिचय समझाना कि पतित–पावन तो यह तुम्हारा बाप है ना। तुम याद भी उनको करते हो ना। कोई गंगाएँ को तो नहीं। ये तो हैं ज्ञान सागर से निकली हुई गंगाएँ। उनको तो शक्ति ही कहा जाता है– शिवशक्ति। ज़रूर शिव द्वारा शक्ति कैसे मिले? ज़रूर मनुष्य को है ना। यह शक्ति माता को कहा जाता है। इनको यह शिव से शक्ति कैसे मिलती है? तो देखो, ये सभी शिवबाबा से योग लगा करके और जो उनके ऊपर पाँच विकार की कट चढ़ी हुई है वो निकालने के लिए। यह चकमक होता है ना, तो मिसाल देते हैं। सुई चकमक को खैंचती है तब जबकि सुई प्योर हो जाती है, कट निकल जाती है। यह तो तुम बच्चों को बाप ने समझाया है कि तुम्हारे ऊपर तमोप्रधान पूरी कट चढ़ी हुई है। इसलिए मेरे साथ योग लगाने से तुम्हारी यह कट उतरेगी, और कोई भी उपाय नहीं है। कट कहा ही जाता है पाप को। उनको यह मालूम नहीं है कि सचमुच इस भारत को पावन बनाने वाला तो पतित–पावन है। सो माताओं द्वारा ही बनाते हैं। बरोबर माताएँ पुकारती हैं दुःशासन नगन करते हैं; इसलिए हमको बचाओ। तो जो बचती हैं तो ये भी गवर्मेन्ट को कहना चाहिए ना कि मदद करो। ये बाप कहते हैं मैं माताओं को कलश का दान करता हूँ। पावन हैं ना। पुरुष उनको नहीं देते हैं तो ऑर्डिनेन्स निकालो। अगर कोई चाहे कि मैं पावन रहूँ तो पावन रहें, पुरुष उनको तंग ना करे और स्त्रियाँ भी ऐसी मस्त चाहिए जो रह सकें। ऐसे नहीं कि मुट्ठी पति को छोड़ करके आवे तो पति की याद में प्राण त्यागे। तो मुट्ठी अधोगति को चली जावे। पिछाड़ी में पति को याद करे या मित्र–संबंधियों को याद करे। नगन होने से बचाने वाला आता है बाप, अभी उनको भूल करके कोई मामे को, चाचे को, फलाने को याद करेगा तो वो भी तो अधोगति करेंगे ना। यानी वो जो पद मिलने वाला है वो एकदम गिर जाएँगे। तो बाप सब बातें अच्छी तरह से समझाते रहते हैं कि कैसे युक्ति रचो। सुख के दिन तो आने वाले हैं। देखो, कहते हैं ना कि तुम्हारे सुख के दिन आएँगे। तुमको (तीन पैर) पृथ्वी के नहीं मिलते हैं, अरे बच्ची! हम तो तुमको सारी सृष्टि रेक्विज़िशन करके दे देता हूँ। वो सृष्टि भी एकदम गोल्डन एज्ड! तुमको ऐसी छी–2 सृष्टि पर नहीं रहना है।.......यह सृष्टि को बिल्कुल ही प्योर कर दूँगा, जिसको फिर स्वर्ग कहते हैं, गोल्डन सृष्टि कहा जाता है। यह तो पत्थर की सृष्टि है ना। तुमको

गोल्डन घर बनाना है। जमीन तो चाहिए ना। तो सारे विश्व की जमीन तुमको रेक्विज़िशन कर देता हूँ, फिर तुम उनके ऊपर खूब अच्छी तरह से सोने के महल बनाना; परन्तु मेरी श्रीमत पर चलेंगे तो। श्रीमत पहले–2 क्या कहती है? कि जो आत्माएँ हैं उनको परमपिता के साथ योग में लगाओ तो कट उतरती जाए। नहीं तो कट न उतरेगी तो इतना पद नहीं पाएँगे, धारणा नहीं होगी। फिर जैसे चरिये–खरिये होते हैं वैसे चरिये–खरिये होकर रहेंगी। इसलिए बाबा कहते हैं कोई भी विकर्म नहीं करना चाहिए। श्रीमत पर अच्छी तरह से चलना चाहिए। बहुत हैं जो श्रीमत पर नहीं चलते हैं। बहुत अच्छे–2 फर्स्टक्लास–2 भी नहीं चलते हैं; क्योंकि माया बुद्धि का योग तोड़ देती है कि यह हमारा बाप है, यह ब्रह्मा हमको नहीं कहते हैं। नहीं, ब्रह्मा भी तो बाप को याद करते हैं; क्योंकि ब्रह्मा को भी याद कौन करवाते हैं? वो परमपिता परमात्मा ब्रह्मा के तन में बैठ करके उनकी आत्मा को कहते हैं कि हे ब्रह्मा की आत्मा! , फलाने की आत्मा! ऐ, राधे की आत्मा! तुमको मुझे याद करना है। उनको भी तो ऐसे ही कहते हैं ना कि मुझे याद करो तो तुम्हारे ऊपर ये जो कट चढ़ी हुई है वो निकल जाएगी। तो मूल बात हुई याद की। सो याद पड़े तब जब अपन को पक्के–3 आत्मा समझे, बहुत पुरुषार्थ करे और श्रीमत पर पूरा चलते रहे; क्योंकि वो माया तो है ना। काम का भी आवेश आ जाएगा, क्रोध का भी आ जाएगा, लोभ भी कोई कम मत समझना। बात मत पूछो। यज्ञ में शुरुआत से ले करके........ये मीठी चीज़ देखी, ये खा लिया। मुझे यह मिलना चाहिए–3। ये क्यों नहीं मिलता है? हमारा फलाना यह है, यह है, सब कुछ करते रहते हैं। अच्छे–2 डट्टे–मट्टे होंगे तो भी किसको देखेंगे इनको कुछ चीज़ मिली, मुझे क्यों नहीं मिलनी चाहिए। ऐसे–2 भी करते हैं। तो बाप बैठकर समझाते हैं यह माया चूहे मिसल है। फूँक देती है, काटती है। तो लोभ में भी फूँक देती है, पता नहीं पड़ता है कि ये लोभ की निशानी है, फिर कुछ न कुछ खाते रहेंगे। इसके लिए मिसाल भी देते हैं कि छिपा–छिपा करके (खाते हैं)। जैसे वो मिसाल देते हैं कि कृष्ण को चक्कर में छोड़ करके गए (और कहा) कि चक्कर से बाहर नहीं निकलना। ...यह लिखा हुआ है शास्त्रों में। एक दृष्टान्त दिया है.....एक चने वाला आया तो वो बोला अभी कोई हमको देखता थोड़े ही है। चलो, हम अब चना लेते हैं। पीछे कृष्ण का कसम भी खाया कि मैं उधार (दूँगा)। ....अभी बना है। कोई बात है नहीं; क्योंकि जो सारा शास्त्र बना है वो सभी कल्पित है, बनाए हुए हैं, झूठे हैं। तुमको कोई सन्यासी कहेंगे यह भी तो तुम्हारा झूठा बना हुआ है। ऐसे भी मुर्दे निकलते हैं। यह कल्पित है, यह कुछ है थोड़े ही। दुनिया है ही नहीं। कुछ है ही नहीं। दुनिया बनी ही नहीं है। यह जो कुछ भी है, कल्पना है कि मैं माता हूँ, मैं पिता हूँ, मैं फलाना हूँ। यह भी एक कल्पना है। ऐसे भी चरिये–खरिये साधू लोग निकलते हैं। यहाँ बहुत करते हैं तो बाप उनको समझाते रहते हैं– बच्चे, ऐसे मत समझो कि बाप नहीं देखते हैं, चोरी करते हो, फलाना करते हो, उठाकर खाते हो, ये करते हो या विकार में जाते हो। नहीं, ये हल्का नशा भी नहीं। बाबा ने कल बताया था कि कैसे–2 मनुष्य दिल पूरी करने के लिए ये करते हैं, वो करते हैं, गंद बहुत करते हैं। पुरुष बहुत जास्ती गंद करते हैं। सो समझते हैं, समझाते भी रहते हैं; परन्तु बनना ही है। ड्रामा की भावी ऐसी बनी हुई है, उसको कर ही क्या सकते हैं! दासियाँ भी ज़रूर बनेंगी, नहीं तो ये सभी कहाँ से आएँगी ? प्रजा भी ज़रूर बनेगी, राजा भी ज़रूर बनेंगे, साहूकार भी ज़रूर बनेंगे, गरीब भी ज़रूर बनेंगे, उनकी भी दास–दासियाँ ज़रूर बनेंगी। इतनी सारी बादशाही स्थापन हो रही है। यह तो कोई बड़ी बात नहीं है; परन्तु बाबा कहते हैं कि जब प्रदर्शनी होती है तो ऐसे–2 को पकड़ो कि देखो, हम भ्रष्टाचारी को श्रेष्टाचारी बना रहे हैं। हमको लोन भी दे सकते हो। भले 10 वर्ष तुमको दूसरे **6%** देते हैं, हम तुमको

9% देते हैं। चीज़ भी तुम्हारी ही रहेगी। मकान जो देंगे वो भी तुम्हारी गवर्मेन्ट के रहेंगे। हम कुछ भी नहीं (लेंगे)। खाली हमको रहने के लिए गारंटी दो कि हम 10 वर्ष तुमको रहने देते हैं, इतना ब्याज तुमको देना पड़ेगा। फाइनेन्स मिनिस्टर से (कहो) अगर कोई सेन्सीबुल बच्चे हों। अभी तक कोई इतना बना नहीं है। बनाने के लिए बाबा कहते रहते हैं।....आगे चल करके कोई न कोई मदद देकर भी कुछ न कुछ जमीन का टुकड़ा भी दिलाय देते हैं, किराया भी अच्छा। तो गवर्मेन्ट को पकड़ना पड़े कि बाप आया हुआ है। ये भारत को सारा रेक्विज़िशन करते हैं। किससे रेक्विज़िशन करते हैं? रावण राज्य से। वो नापाक राजधानी है और बाबा पाक राजधानी स्थापन करते हैं। वो पाकिस्तान नहीं है। वो तो यवन और उनका ये बना था; क्योंकि वो लोग हमेशा जहाँ–तहाँ भी छोड़ते हैं वहाँ...। देखो, कहाँ भी जाओ साउथ वियटनाम, नॉर्थ वियटनाम, साउथ कोरिया, नार्थ कोरिया। देखो, इस भारत को भी ऐसा ही कर दिया है, नहीं तो यहाँ आगे कोई पार्टीशन थोड़े ही थी। तो पार्टीशन डाल देते हैं। बाबा फिर क्या करते हैं, इन दोनों में पार्टीशन डाल देते हैं, जिनसे फिर भारत को मक्खन मिलता है। आखानी बनी है। हिम्मत चाहिए। उसमें पहले–2 तो श्रीमत चाहिए। श्रीमत जो कहे और उनके ऊपर न चले तो फिर वो झट भ्रष्ट हो पड़ते हैं। बाप तो बैठ करके बहुत डायरेक्शन भी देते हैं– इसको पकड़ो–2, ऐसे उनको समझाओ, सर्विस करो। तो समझाने वाला बड़ा सयाना चाहिए, जो अच्छी तरह से बाप के ऊपर लव हो। देखो, यह भी तो एक लव है ना कि हम शिवबाबा के रथ के लिए एक स्वेटर बनाकर भेज देते हैं। अभी वो कौन है? वो हमारा बाबा है, बेहद का बाबा है, प्राण का दान देने वाला, प्राणों को बचाने वाला। यह हमको स्वर्ग का मालिक (बनाने वाला है)। तो किसको याद किया? शिवबाबा को। अब यह रथ को तो.. .भेज दिया कपड़ा भेज दिया; परन्तु क्यों भेज दिया? शिवबाबा का रथ है। शिवबाबा इस रथ द्वारा हमको ये कहते हैं। हम शिवबाबा के रथ को टोली भेजूँ, श्रृंगारूं। जैसे हुसैन के घोड़े को श्रृंगारते हैं ना। तुम लोग इतना अनुभवी नहीं हो। यह सब तो बहुत देखा हुआ है ना। घोड़े को कितना श्रृंगारते हैं। तो देखो, यह सच्चा पक्का–2 घोड़ा, जो क्या करते हैं? पतित दुनिया को पावन बनाने वाला है। देखो उनका रथ। वो श्रृंगार तो बाहर का है, ये श्रृंगार तो अपना कर रहे हैं। कैसे श्रृंगार कर रहे हैं? बाबा को याद कर रहे हैं और जो (एम)–ऑब्जेक्ट है, वो अपने पद को भी याद कर रहे हैं और फिर बच्चे भी जानते हैं कि कल्प–2 ये दोनों तो बड़े पक्के हैं ज़रूर; क्योंकि इनकी तो बिल्कुल निशानी है। ये मम्मा और बाबा ज्ञान–ज्ञानेश्वरी (सो) राज–राजेश्वरी बनती है। फिर ज्ञान–ज्ञानेश्वरी जगदम्बा के बच्चे सो भी तो राज–राजेश्वरी बनना चाहिए ना। तो बरोबर राज्य के मालिक बनते हैं; परन्तु नं०वार पुरुषार्थ अनुसार। है तो एक ही बात ना। अगर हम मम्मा को कहते रहें ज्ञान–ज्ञानेश्वरी तो तुम भी ज्ञान–ज्ञानेश्वरी। ज्ञान किसलिए देते हैं? राजयोग सो राज–राजेश्वरी बनते हो। ...पीछे जितना जो सर्विस करते हैं उतना वो बनेंगे। बरोबर पाण्डवों ने कौरवों से सारी सृष्टि रेक्विज़िशन कर ली थी और बरोबर वो सृष्टि स्वर्ग बन गई। ऊँचे ते ऊँचा भगवान (कहते हैं) कि मेरे को याद करो। मैं तुमको वर्सा दे देता हूँ। कितना अच्छा समझाते हैं! अच्छा, टोली ले आओ। ...(गुड़) जाने (और) गुड़ की गोथरी जाने। यह उस गुड़ की गोथरी है ना। उसको कहा जाता है नॉलेजफुल, गुड़। फिर यह गोथरी गुड़ की और यह जानें कुछ न कुछ कि मेरी गोथरी में गुड़ आया है या नहीं आया है। यह तो यह गोथरी जानें। तुम भी जान सकते हो, जो सेन्सीबुल, समझू हैं, सयाने हैं। बाकी जो सर्विसेबुल ही नही हैं वो बुद्धू लोग क्या जानेंगे!

मीठे–2, सर्विसेबुल, आज्ञाकारी बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।